टिप्पणी

19

प्रमुख उद्योग और औद्योगिक संकुल

क्या आप अपने घर में कुछ ऐसी चीजों को पहचान सकते हैं जो प्राकृतिक रूप से नहीं होती अपितु जिन्हें मशीनों के द्वारा निर्मित किया जाता है? ऐसी पांच चीजों की सूची बनाइये। क्या आपने कभी सोचा है कि इन्हें कहां बनाया गया? कपड़े, बर्तन, कागज, प्लास्टिक के डिब्बे, कापी, पुस्तकें, पेन और पेंसिल इत्यादि को उद्योगों में बनाया जाता है। उद्योग ऐसे स्थान हैं जहां चीजों का उत्पादन और विनिर्माण बड़ी मात्रा में होता है। इस क्षेत्र में खनन और उत्खनन, विनिर्माण (पंजीकृत और अपंजीकृत), गैस, बिजली, निर्माण और जल आपूर्ति आते हैं। इसको अर्थव्यवस्था का द्वितीयक क्षेत्र भी कहा जाता है। इनमें से अनेक संसाधनों को वस्तुओं के निर्माण में प्रयोग किया जाता है। उद्योग बड़ी मात्रा में लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। जो लोग कृषि कार्यों में जुड़े होते हैं उन्हें प्राथमिक गतिविधि में संलग्न कहा जाता है। इसी प्रकार विनिर्माण और उद्योगों में लगे लोगों को द्वितीयक गतिविधि में संलग्न कहा जाता है।

सीखने के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् शिक्षार्थी:

- राष्ट्रीय विकास में उद्योगों की भूमिका को उजागर करते हैं;
- कृषि आधारित और खनिज आधारित उद्योगों में अंतर कर पाते हैं;
- प्रमुख उद्योगों और उनके उत्पादन के स्थानिक वितरण का वर्णन करते हैं और
- प्रमुख उद्योग परिसरों और क्षेत्रों को पहचान सकते हैं।

19.1 राष्ट्रीय विकास में उद्योगों की भूमिका और महत्व

शिक्षार्थियों जैसा कि पिछले पाठों में चर्चा की गई कि कृषि, उद्योग और सेवाएं देश के लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। उद्योगों को विकास विशेषत: आर्थिक विकास की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है।

इसके निम्नलिखित कारण हैं:-

टिप्पणी

1. विनिर्माण उद्योग कृषि के आधुनिकीकरण में सहायक होते हैं जो भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है।

2. वे लोगों की कृषि पर अधिक निर्भरता को नौकरियां प्रदान कर कृषि पर मानव बोझ को कम करते हैं।

3. उद्योग, बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देते हैं; इसलिए औद्योगिक विकास हमारे देश में बेरोजगारी और गरीबी कम करने की पूर्व शर्त है।

4. पिछड़े क्षेत्रों में औद्योगिक विकास का लक्ष्य क्षेत्रीय असमानता को कम करना होता है।

5. विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात व्यापार और वाणिज्य को विस्तार देने में तथा विदेशी मुद्रा आकर्षित करने में सहायक होता है।

6. कच्चे माल को तैयार माल में परिवर्तित करने से उत्पादन और कुशल श्रम का मूल्य परिवर्तित होता है।

भारत में उद्योग लगभग 12 प्रतिशत लोगों को रोजगार देते हैं। इस सेक्टर ने सकल घरेलू उत्पाद (सकल मूल्य संवर्धन) में वर्ष 2015-16, 2016-17 और 2017-18 में क्रमशः 29.8 प्रतिशत, 29.3 प्रतिशत और 29.1 प्रतिशत योगदान दिया है। इन्हीं तीन वर्षों की अवधि में कृषि और कृषि संबंधी गतिविधियों का योगदान क्रमशः 17.7 प्रतिशत, 17.9 प्रतिशत और 17.1 प्रतिशत था।

क्या आप जानते हैं?

यहां इस बात का उल्लेख करना बहुत महत्वपूर्ण है कि कृषि का महत्व मानव की आधारभूत जरूरत भोजन प्रदान करना है और इसको मात्र सकल घरेलू उत्पाद में योगदान के रूप में नहीं देखा जा सकता। यहां दिए गए तुलनात्मक आंकड़े इस बात को दर्शाने के लिए है कि उद्योग किस प्रकार भारत के सकल घरेलू उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अर्थ व्यवस्था में सीधे योगदान के साथ द्वितीयक क्षेत्र का सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजन को कई गुणा बढ़ाने की क्षमता रखता है। राष्ट्रीय विनिर्माण नीति 2011 के अनुसार विनिर्माण क्षेत्र में सृजित प्रत्येक रोजगार संबंधित गतिविधियों में दो-तीन अतिरिक्त रोजगार सृजित करता है। आमतौर पर विभिन्न उद्योगों में श्रम की अलग मात्रा और अलग प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है। वस्त्र, चमड़ा और खाद्य संस्करण उद्योगों में मशीनरी उद्योगों के मुकाबले अधिक श्रमिक लगाए जाते हैं और इसलिए इन्हें श्रम प्रधान उद्योग कहा जाता है।

उद्योग, वस्तुओं तथा नियुक्त श्रमिकों के कौशल में मूल्य जोड़ते हैं, इस कारण इस क्षेत्र को परिवर्तनकारी क्षेत्र भी कहते हैं। भारत जैसे देश में जहां कृषि क्षेत्र पर अधिशेष श्रम का बोझ है- वहां उद्योग क्षेत्र अधिशेष को अवशोषित करने का एक अच्छा विकल्प हो सकता है। जैसा कि चित्र

टिप्पणी

19.1 में देखा जा सकता है कि विनिर्माण और अन्य उद्योगों की सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र में लगे श्रमिक बल की प्रतिशतता की तुलना में काफी बड़ी हिस्सेदारी है।

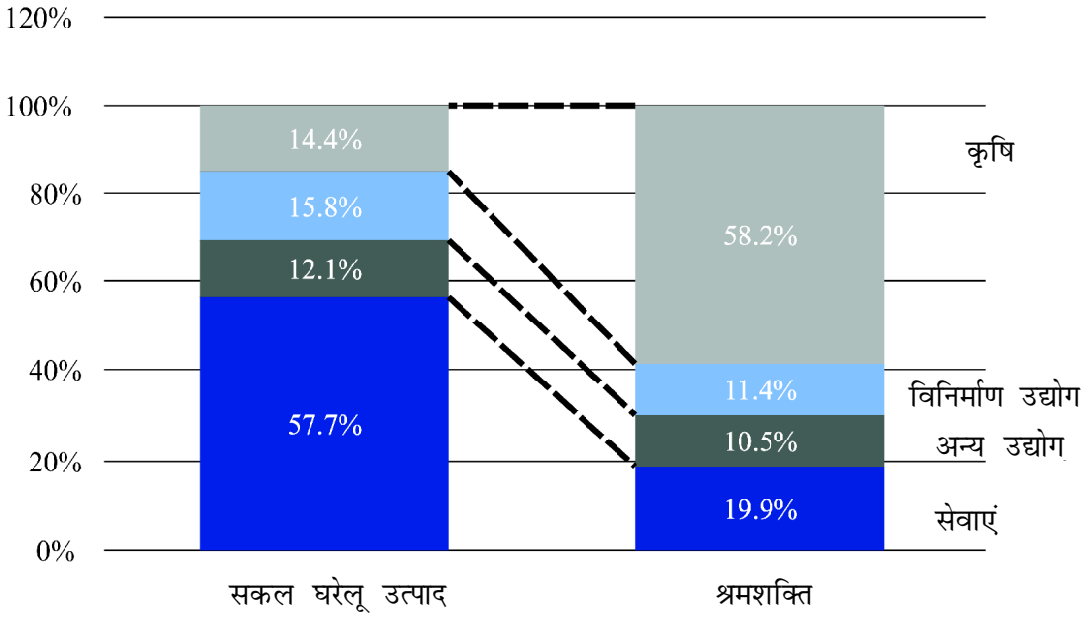

चित्र 19.1 भारत के विभिन्न क्षेत्रों में श्रम का वितरण और 2017-18 की अर्थव्यवस्था में सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा

निरंतर बढ़ती जनसंख्या वाले भारत की जनसांख्यिकी जैसे कामकाजी आयु समूह का बहुत बड़ा प्रतिशत कृषि के अतिरिक्त औद्योगिक और सेवा क्षेत्र के महत्व की अनुपूर्ति करता है। द्वितीयक क्षेत्रक को पंचवर्षीय योजनाओं में दिए गए महत्व और इस क्षेत्र की उन्नति भविष्य में आने वाले वर्षों में बड़ी संख्या में रोजगार प्रदान करने की सम्भावना रखता है।

क्रियाकलाप

विश्व के किन्हीं पांच देशों की सूची बनाइए और अपने देश की अर्थव्यवस्था में कृषि, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रक के योगदान को ज्ञात कीजिए।

यह जानने के लिए कि आप राष्ट्रीय विकास में उद्योगों और उनके महत्व को कितना समझ पाए हैं- आइये हम निम्नलिखित प्रश्नों को देखें।

पाठगत प्रश्न 19.1

1. द्वितीयक क्षेत्र के अंतर्गत किन गतिविधियों को वर्गीकृत किया जा सकता है?

2. भारत में उद्योगों में कार्य कर रहे श्रमिक बल की प्रतिशतता कितनी है?

टिप्पणी

3. भारतीय अर्थ व्यवस्था में उद्योग क्यों महत्वपूर्ण है? नीचे दिए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए

   क. क्योंकि वे बहुत बड़े हैं

   ख. क्योंकि वे सब जगह पाए जाते हैं

   ग. क्योंकि वे लोगों की बड़ी संख्या को रोजगार देते हैं, कृषि को आधुनिक बनाते हैं और लोगों की कृषि पर निर्भरता को कम करते हैं।

19.2 उद्योगों की अवस्थिति

राष्ट्रीय विकास में उद्योग के महत्व को जानने के बाद यह जानना जरूरी है कि क्या उद्योग कहीं भी स्थापित किए जा सकते हैं या उनकी स्थापना के लिए कुछ विशेष जरूरतें होती।

क्रियाकलाप: आपके निवास के निकट कोई उद्योग है या परिवार में से कोई किसी उद्योग में लगा हुआ है? उन लोगों से बातचीत करें और यह जानने का प्रयास करें कि उस उद्योग के वहां अवस्थित होने के लिए कौन-से कारक उत्तरदायी हैं?

किसी उद्योग को स्थापित करने के लिए दिमाग में यह विचार होना जरूरी है कि किस प्रकार लाभ को अधिकतम किया जा सकता है। उद्योग लागत कम करके अपने लाभ बढ़ाते हैं। इसलिए उद्योग ऐसे क्षेत्रों में अवस्थित होते हैं जहां वे अपने उत्पादन की लागत को कम कर सकते हैं। उद्योग की अवस्थिति को निर्धारित करने वाले कुछ कारक हैं-

1. **कच्चा माल:** किसी भी उद्योग के लिए प्रयोग होने वाले कच्चे माल की उपलब्धता पहली शर्त है और यह सस्ती दर पर उपलब्ध होना चाहिए और इसकी उद्योग स्थल तक ढुलाई भी आसान होनी चाहिए। ऐसे उद्योग जिन्हें कच्चे माल की बड़ी मात्रा, तथा सूख जाने वाले कच्चे माल अथवा नष्ट हो जाने वाले कच्चे माल की जरूरत होती है, वे कच्चे माल के स्रोत के निकट अवस्थित होते हैं जैसे कृषि आधारित उद्योग और डेयरी उद्योग।

2. **बाजार:** निर्मित माल को बेचने के लिए बाजार तक पहुंच की जरूरत होती है। यहां बाजार का अर्थ ऐसे लोगों से है जिन्हें निर्मित सामान की जरूरत है तथा उनके पास खरीदने की शक्ति है। दूर दराज अथवा एकांत क्षेत्र जहां आबादी भी कम होती है और लोगों की क्रय शक्ति भी कम होती है उन्हें छोटा बाजार कहा जाता है।

3. **श्रम आपूर्ति:** उद्योगों में काम करने वाली श्रम अथवा मानव शक्ति भी एक महत्वपूर्ण घटक हैं जो उद्योग की अवस्थिति को निर्धारित करती है। गत वर्षों में उद्योगों के मशीनीकरण ने श्रम आपूर्ति के महत्व को कम कर दिया है, परंतु फिर भी अनेक ऐसे उद्योग हैं जहां श्रमिकों की काफी बड़ी संख्या में जरूरत होती है।

4. **ऊर्जा का स्रोत:** ऊर्जा की भारी आपूर्ति पर निर्भर उद्योग ऊर्जा के स्रोत के निकट ही अवस्थित होते हैं। पहले उद्योगों के लिए कोयला ऊर्जा का स्रोत होता था, इसलिए उद्योग भी स्रोत के निकट अवस्थित होते थे। बाद में जल-विद्युत और पेट्रोलियम ऊर्जा के स्रोत बन गए।

टिप्पणी

5. **यातायात और संचार सुविधाएं:** कच्चे माल को स्रोत से उद्योग तक पहुंचाने के लिए तेज और प्रभावी यातायात की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार तैयार माल को बाजार तक पहुंचाने के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है। उद्योग की अवस्थिति के लिए माल ढुलाई पर आने वाला खर्च भी एक महत्वपूर्ण घटक होता है। पूरे विश्व में उद्योग ऐसी जगह केन्द्रित होते हैं जहां यातायात और संचार की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हों। उद्योग के अंदर और बाहर सूचनाओं के प्रेषण एवं प्रबंधन के लिए अच्छी संचार सुविधा की जरूरत होती है। क्या आप ज्ञात कर सकते हैं कि पश्चिमी यूरोप और पूर्व उत्तर अमरीका में उद्योगों की संख्या अधिक क्यों हैं?

6. **सरकारी नीतियां:** औद्योगिक विकास के लिए सहायक सरकार की नीतियां भी एक महत्वपूर्ण घटक है। भारत में सरकार ने क्षेत्रीय नीतियों और लक्षित क्षेत्रों से भी अपनी पंचवर्षीय योजनाओं में अपनाया है ताकि देश के विशेष क्षेत्रों में औद्योगिक विकास को प्रसारित किया जा सके।

7. **संयुक्त अर्थ व्यवस्थाएं:** अनेक बार उद्योग एक-दूसरे के निकट होने से लाभान्वित होते हैं। वे एक-दूसरे द्वारा तैयार माल का कच्चे माल की तरह प्रयोग करते हैं। ऐसे उद्योगों को संयुक्त अर्थ व्यवस्थाएं कहते हैं।

उपरोक्त कारक और घटक अधिकांश उद्योगों की अवस्थिति के लिए जिम्मेदार होते हैं। लेकिन कुछ ऐसे उद्योग भी हैं जो उपरोक्त कारकों पर निर्भर नहीं करते और उन्हें कहीं भी स्थापित किया जा सकता है। ऐसा इस कारण से है कि वे किसी कच्चे माल पर निर्भर नहीं करते और अधिकांशत: ऐसे अवयवों पर निर्भर करते हैं जिन्हें कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है। इससे उनकी कहीं भी स्थापना की स्वतंत्रता प्राप्त होती है। ऐसे उद्योगों को फुटलूज उद्योग कहते हैं। इनको प्रभावित करने वाला एक ही महत्वपूर्ण कारक सड़क मार्ग से वहां तक की पहुंच है। फुटलूज उद्योग प्राय: प्रदूषण मुक्त होते हैं। फुटलूज उद्योगों के उदाहरणों में मोबाइल शामिल हैं। आइए अब हम यह जानने का प्रयास करें कि आप किस उद्योग की अवस्थिति को निर्धारित करने वाले घटकों के बारे में कितना समझ पाए हैं।

पाठगत प्रश्न 19.2

1. कच्चा माल, बाजार, श्रम आपूर्ति, ऊर्जा का स्रोत, यातायात और संचार, सरकार की नीतियां तथा संयुक्त अर्थ व्यवस्थाएं जैसे कारक किसी उद्योग की..... के लिए जिम्मेदार होते हैं।

2. यदि कच्चा माल नष्ट होने वाला हो तो आपके विचार में ऐसा उद्योग कहां अवस्थित होगा?

3. औद्योगिक इकाईयां एक-दूसरे से लाभान्वित होती हैं.....?

4. उद्योग लागत अधिकतम करने अथवा लाभ अधिकतम करने में से किस एक पर आधारित होते हैं?

टिप्पणी

19.3 उद्योगों के प्रकार

पिछले भागों में हमने उद्योगों में उत्पादित विभिन्न वस्तुओं के बारे में बात की है। क्या आप की दृष्टि में सभी उद्योग एक जैसे होते हैं? क्या सभी उद्योग एक समान नहीं होते? वे विभिन्न कच्चे मालों का प्रयोग करते हैं और विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को अलग-अलग मात्रा में निर्मित करते हैं। इस प्रकार उद्योग विभिन्न आधारों पर अलग-अलग प्रकार के हो सकते हैं। तालिका 19.1 उद्योगों के वर्गीकरण का एक विचार प्रस्तुत करती है-

तालिका 19.1 उद्योगों का वर्गीकरण

क्रम	आधार	उद्योगों के प्रकार	प्रमुख विशेषताएं	उदाहरण
1.	कच्चे माल के स्रोत के आधार पर	(i) कृषि आधारित उद्योग	कृषि-उत्पादकों को कच्चे माल के रूप में उपयोग करना	सूती-वस्त्र उद्योग, जूट या पटसन उद्योग, चीनी (शक्कर) उद्योग एवं कागज उद्योग
		(ii) खनिज आधारित उद्योग	खनिजों का कच्चे माल के रूप में उपयोग करना	लोहा और इस्पात, रसायन एवं सीमेंट उद्योग
2.	स्वामित्व (के आधार पर)	(i) सार्वजनिक क्षेत्र	स्वामित्व नियंत्रण एवं प्रबंधन सरकार द्वारा	बोकारो लोहा एवं इस्पात संयंत्र, चितरंजन लोकोमोटिव
		(ii) निजी-क्षेत्र	स्वामित्व, नियंत्रण एवं प्रबंधन किसी व्यक्ति अथवा समूह द्वारा कम्पनी के रूप में	टाटा-लोहा एवं इस्पात संयंत्र, जे.के. सीमेंट अपोलो टायर्स,
		(iii) संयुक्त क्षेत्र	संयुक्त रूप से सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र स्वामित्व	मारुति उद्योग
		(iv) सहकारी क्षेत्र	कच्चे माल के उत्पादकों द्वारा सहकारी समिति बनाकर स्थापित उद्योग	महाराष्ट्र के चीनी उद्योग 'अमूल' (गुजरात) और 'इफको' (कांदला)

टिप्पणी

3.	प्रमुख कार्य अथवा योगदान के आधार पर	(i) आधारभूत उद्योग	आधारभूत उद्योगों के द्वारा विनिर्मित उत्पादों का दूसरे अन्य उद्योगों द्वारा कच्चे माल के रूप में उपयोग करना	लोहा और इस्पात उद्योग, पेट्रो-रसायन उद्योग
		(ii) उपभोक्ता उद्योग	इन उद्योगों द्वारा निर्मित उत्पादों का सीधे उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग में लाया जाना	टूथपेस्ट साबुन चीनी उद्योग
4.	उद्योग के आकार के	(i) बड़े पैमाने के उद्योग	अधिक पूंजी निवेश, भारी मशीनरी, कारीगरों की अधिक संख्या, विशाल संयंत्र 24 घंटे अनवरत कार्य	लोहा और इस्पात उद्योग तेल-शोधक संयंत्र
		(ii) छोटे पैमाने के उद्योग	कम पूंजी निवेश, छोटे स्तर के संयंत्र, कारीगरों एवं कार्यशील मजदूरों की थोड़ी संख्या	साइकिल उद्योग, बिजली सामान बनाने वाले उद्योग
5.	कच्चे माल तथा तैयार माल के भार के आधार पर	(i) भारी उद्योग	कच्चे माल तथा विनिर्मित माल दोनों भारी-भरकम तथा आकार में बड़े परिवहन में काफी लागत	लोहा एवं इस्पात भारत हेवीइलेक्ट्रिकल लिमिटेड (हरिद्वार जनरेटर जैसे भारी बिजली उत्पाद)
		(i) हल्के उद्योग	कच्चे माल तथा उत्पाद दोनों वजन में हल्के परिवहन में कम लागत	घड़ियां, सिले-सिलाए वस्त्र निर्माण, खिलौने, फाउंटेन पेन उद्योग

पाठगत प्रश्न 19.3

1. ऐसे पांच आधार लिखिए जिनके आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण किया जा सकता है?

2. सौंदर्य प्रधासन एक..... उद्योग है।

टिप्पणी

3. सरकार द्वारा प्रबंधित और स्वामित्व वाले उद्योगों को ..... कहते हैं तथा किसी एक व्यक्ति अथवा समूह द्वारा संचालित एवं स्वामित्व वाले उद्योग को.....कहते हैं।

क्रियाकलाप: क्या आपने कभी सोचा है कि पापड़ अथवा अचार किस प्रकार के उद्योग में बनाए जाते हैं। लघु उद्योग अथवा बड़े स्तर के उद्योग में? जानने का प्रयास कीजिए।

19.4 कृषि आधारित उद्योग

जैसा आप पहले पढ़ चुके हैं कि विनिर्माण उद्योग की भांति कृषि भी भारतीय अर्थ व्यवस्था का एक अविभाज्य क्षेत्र है। दोनों क्षेत्र देश की अर्थ व्यवस्था को बल देने के लिए एक-दूसरे के पूरक हैं। उद्योगों में कृषि उत्पादों को अन्य वस्तुओं के निर्माण के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। जबकि उद्योग कृषि के लिए यंत्र एवं उपकरण निर्माण उद्योग द्वारा उपलब्ध करवाए जाते हैं जिससे फसलें उगाने और जैम तथा जैली जैसी प्रसंस्कृत वस्तुएं बनाई जाती हैं।

अमूल

अमूल की कहानी भारत में गुजरात के एक छोटे-से गांव में 70 वर्ष पहले शुरू हुई थी। स्थानीय व्यापारी वर्ग की शोषणकारी व्यवहार ने सहकारी आंदोलन को उत्प्रेरित किया। जब लोगों ने समाधान के लिए सरदार पटेल से संपर्क किया था तो उन्होंने सलाह दी थी कि बिचौलिए से पीछा छुड़ाकर वे अपनी सहकारी समिति बनाकर खरीद, प्रसंस्करण और विपणन करें। सरदार पटेल जी के प्रेरणा एवं मोरारजी देसाई तथा त्रिभुवनदास पटेल के मार्ग निर्देशन में 1946 में किसानों ने अपनी सहकारी समिति बनाई। इसको कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड कहा जाता था। इसका प्रारंभ केवल दो गांवों तथा 247 लीटर दूध के साथ डेयरी सहकारी समिति के साथ हुआ था। अब इसका अमूल डेयरी के नाम से जाना जाता है। डॉ. वर्गीज कूरियन को इस सहकारी का चेयरमैन नियुक्त किया गया था। अमूल डेयरी का यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय डेयरी विकास नीति का आधार बना।

स्रोत: www.amul.com

भारत में अनेक उद्योगों की भांति दो प्रमुख कृषि आधारित उद्योग हैं जो भारत की अर्थ व्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ये हैं- चीनी और कपास उद्योग। आइये हम इन उद्योगों के बारे में और अधिक जानने का प्रयास करें।

(क) चीनी उद्योग: सभी लोग मिठाइयां और चाकलेट पसंद करते हैं। हम सब त्यौहारों की प्रतीक्षा करते हैं ताकि मिठाइयों का आनंद ले सकें। यहां तक कि प्रतिदिन पिये जाने वाले दूध, चाय और काफी में भी चीनी होती है। घरों में प्रतिदिन मीठे के रूप में गुड़ का प्रयोग होता है। हमारे कुछ त्यौहारों और धार्मिक अनुष्ठानों में इसका विशेष स्थान है। क्या आप जानते हैं कि चीनी उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है और गुड़ और खंडसारी के उत्पादन में प्रथम स्थान है। जो बहुत भारी मात्रा वाला कच्चा माल है। गन्ने में विद्यमान सुक्रोस की ढुलाई के दौरान क्षति होती है। इसलिए गन्ने के रस से चीनी गुड़ और खंडसारी बनाने वाली चीनी मिलें प्राय: गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में अवस्थित होती हैं जहां कच्चा माल उत्पादित होता है।

टिप्पणी

क्या आप जानते हैं?

मकर संक्रांति के दौरान जिसे भारत के विभिन्न भागों में पोंगल, सुग्गी, हब्बा, उत्तरायण, माघी और बिहू के नाम से जाना जाता है, धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए गुड़ को एक महत्वपूर्ण वस्तु के रूप में प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए पूर्वी भारत के भागों में दही, चूड़ा और पोहा गुड़ के साथ खाया जाता है। कर्नाटक में एल्लू बिरोधा में भी गुड़ का प्रयोग किया जाता है। पूरे उत्तर भारत में चिक्की और लड्डू गुड़ और तिल से बनाए जाते हैं। आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में अपालू तथा महाराष्ट्र जैसे स्थानों में गुलाची पोली और पूरन पोली बनाई जाती है।

वितरण: क्या आप सभी ऐसे स्थान पर गए हैं जहां गन्ने के खेत हों? क्या आप याद करके गन्ना उत्पादक स्थानों और राज्यों की सूची बना सकते हैं? अब नीचे दिए गए भारत के मानचित्र को देखिए जिसमें भारत में चीनी मिलों को दर्शाया गया है। चित्र 19.2 गन्ना

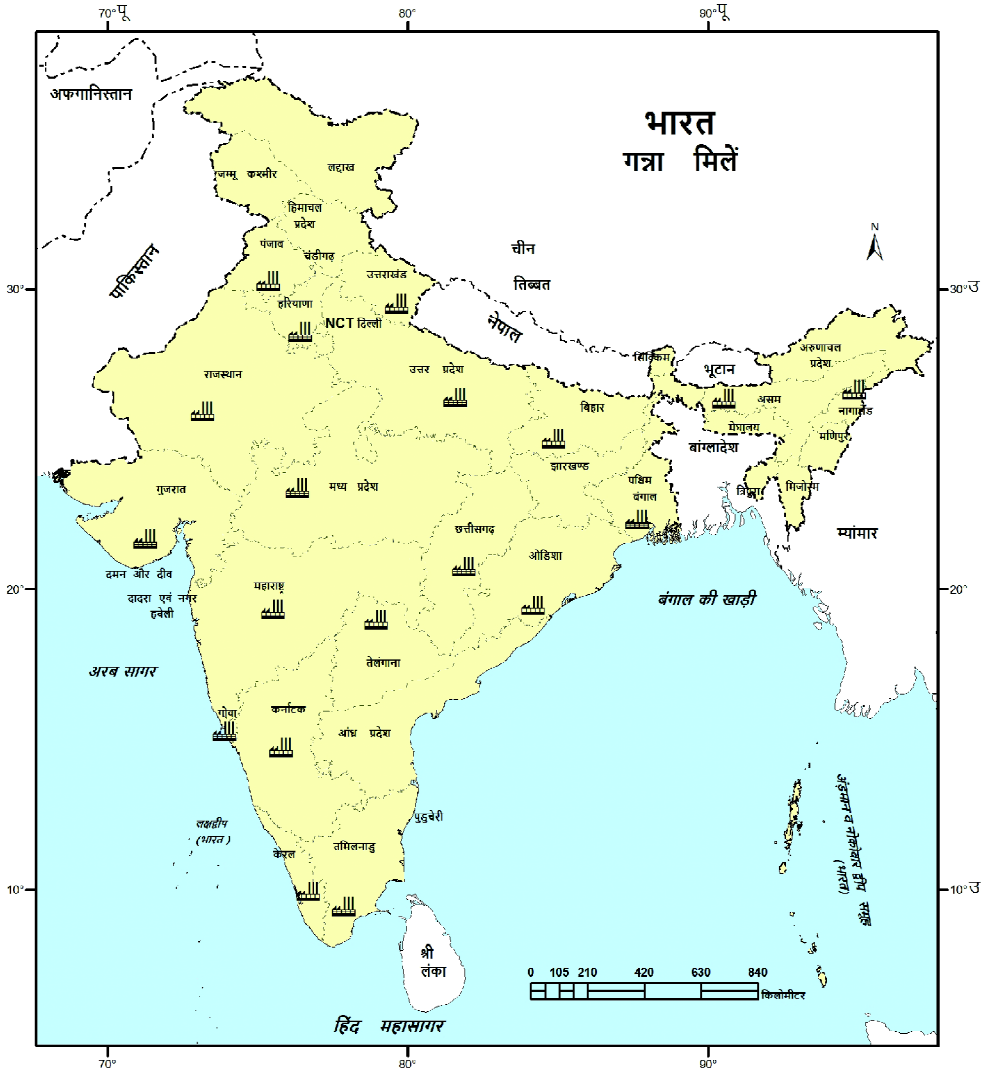

चित्र 19.3 भारत में चीनी मिलों का वितरण

टिप्पणी

चीनी उद्योग के वितरण के जिम्मेवार घटक:

जैसा कि आप जानते हैं कि गन्ना भारत की नकदी फसलों में से एक महत्वपूर्ण फसल है। पिछले कुछ वर्षों में गन्ने के उत्पादन में नाटकीय वृद्धि हुई है। भारत में गन्ना उत्पादक क्षेत्रों को कृषि जलवायु क्षेत्रों में बांटा जा सकता है।

1. उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्र जिसमें बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा आते हैं।

2. उष्णकटिबंधीय क्षेत्र जिसमें महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश और कनार्टक आते हैं। क्योंकि गन्ना नष्ट होने वाली वस्तु है और कुछ समय पश्चात इसमें विद्यमान सुक्रोस भी समाप्त हो जाता है इसलिए चीनी मिलें इन क्षेत्रों में गन्ने के स्रोतों के निकट अवस्थित होती हैं।

प्रारंभ में गन्ना उद्योगों को उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थापित किया गया था। 1950 के दशक तक गन्ना उत्पादक क्षेत्र का 90 प्रतिशत इस क्षेत्र में अवस्थित था। योजना प्रक्रिया के शुरू होने के साथ 'गन्ना' को उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र का मार्ग मिला। गन्ना को उष्णकटिबंधीय फसल होने के कारण इस क्षेत्र में उत्पादन के अनुकूल जलवायु मिली जिससे अधिक उत्पादन हुआ। 1950 के दशक के बाद इस क्षेत्र में अधिक उन्नति हुई और 1994-95 में उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में गन्ने का क्षेत्र 65 प्रतिशत था तथा कुल उत्पादन का 55 प्रतिशत इस क्षेत्र में पैदा हुआ।

पिछले रूझानों से प्रत्यक्ष है कि उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र पहले से ही विकसित है और संतृप्ति स्तर को प्राप्त कर चुका है। इस क्षेत्र के एक बड़े राज्य महाराष्ट्र में पानी की कमी है इससे गन्ने की कृषि प्रभावित होती है। अत: उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्र अपनी उपजाऊ भूमि और उच्च जल स्तर के कारण भविष्य में उन्नत कृषि के लिए उपयुक्त प्रतीत होता है।

उत्पादन: चीनी उद्योग आमतौर पर दो-तीन साल अधिक उत्पादन करता है और फिर एक-दो वर्ष कम उत्पादन होता है। गन्ने की फसल मजबूत है और जलवायु में बदलावों को सह सकता है। अन्य फसलों के मुकाबले इस फसल के लिए किसानों को कम मेहनत और काम के कम घंटे खर्च करने पड़ते हैं इसलिए प्राय: इस फसल को 'सुस्त फसल' कहा जाता है।

? क्या आप जानते हैं?

भारत में चीनी और गन्ना का इतिहास हजारों साल पुराना है। भारत के प्राचीन ग्रंथ गन्ने के उद्गम के बारे में कुछ कहानियाँ कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि चौथी से छठे दशक के बीच चीनी बनाने की कला खोजी गई परंतु चीनी बनाना बहुत कठिन और जटिल था। गन्ने को छोटे टुकड़ों में काट कर भारी वजन के नीचे पेरा जाता था और प्राप्त जूस को तब तक उबाला और हिलाया जाता था जब तक कि वह ठोस नहीं हो जाता था। असमान आकार के इन ठोस टुकड़ों को शकर कहा जाता था जो संस्कृत में अर्थ था 'कंकड़'। आधुनिक शब्द 'शुगर' को 'शकर' से लिया गया है। अत: यह वास्तविक रूप से कहा जा सकता है कि भारत गन्ने और चीनी का असली घर रहा है।

टिप्पणी

1920 दशक के मध्य से पहले भारत अपनी जरूरत पूरी करने के लिए चीनी का आयात करता था। 1920 के दशक में उत्तर प्रदेश और बिहार में अनेक चीनी मिलें दिखाई देने लगीं। 1930-31 तक 29 चीनी मिलें थी जो 1,00,000 मीट्रिक टन उत्पादन कर रही थीं। चीनी उद्योग को जापान की चीनी से मुकाबला करना पड़ा जो भारतीय बाजारों में व्याप्त थी।

चीनी मिलों, गन्ने के उत्पादन इत्यादि को 2015-16 से लेकर 2021-22 तक नीचे दी गई तालिका में विवरण सहित देखा जा सकता है।

तालिका 19.2 2015-16 से 2020-21 के बीच चीनी मिलों का ब्यौरा, गन्ने का उत्पादन इत्यादि

विवरण	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21
काम कर रही फैक्ट्रियां	526	493	525	532	461	506
गन्ने का औसत (000 है.)	5284	4945	5042	5502	4841	5288
गन्ने का उत्पादन (लाख टन)	3369	3036	4110	4142	3440	4018
गुड़ उत्पादन (000 टन)	10873	9026	14063	13788	11526	14906

भारतीय चीनी मिल्स एसोसिएशन के अनुसार 2021-22 के प्रारंभ में अक्तूबर में चीनी का मौसम प्रारंभ होते समय शुरूआती भंडार में लगभग 8.7 मिलियन टन होने का पूर्वानुमान लगाया गया।

(ख) कपास उद्योग अथवा सूती वस्त्र उद्योग: कपास उद्योग भारत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण भाग रहा है। हम सब जानते हैं कि महात्मा गांधी चरखे पर कपास काता करते थे। स्वतंत्रता से पहले भी चरखे तथा हथकरघा पर सूत बनाया जाता था। बाद में पावर लूम्स आ गईं जिससे हाथ चरखा और हथकरघा तकनीक को धक्का लगा। अनेक हिन्दी फिल्मों में इस कठिन परिस्थिति को दर्शाया गया है। क्या आप जानते हैं कि भारत में पहली मिल कहां लगाई गई थी? यह 1854 में मुम्बई में लगाई गई थी। यह इस कारण था क्योंकि गुजरात और महाराष्ट्र कपास उगाने वाली पट्टी में स्थित थे।

वितरण: आपने कृषि के माड्यूल में कपास लगाने की जरूरतों के बारे में पढ़ा होगा। क्या आप उनमें से कुछ को याद कर सकते हैं? भारत के इस क्षेत्र में आवश्यक जलवायु और मृदा के अतिरिक्त एक बाजार तथा बंदरगाह की सुविधा सहित यातायात एवं श्रम आपूर्ति की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इन सब परिस्थितियों ने इस क्षेत्र में सूती कपड़ा मिल की स्थापना को बल दिया। कपास उद्योग का कृषि

टिप्पणी

के साथ निकट का सम्बन्ध है क्योंकि यह एक कृषि आधारित उद्योग है जिसमें कपास को कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस उद्योग में काफी मजदूरों की आवश्यकता होती है क्योंकि कपास की फली तोड़ने से धुनने और काटने तक में श्रम की जरूरत होती है। यह उद्योग अन्य उद्योगों जैसे रसायन, रंगाई, पैकिंग के सामान, मशीनों और फैशन को भी सहारा देता है।

वर्तमान में सूती कपड़ा मिलें अधिकांशतः पश्चिमी भारत में स्थित हैं जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश। भारत के मानचित्र को देखकर कपास की फसल एवं कपास उद्योग के लिए आवश्यक जलवायु तथा अन्य जरूरतों को एवं उनके संबंध को याद करने की कोशिश करें। सूत (धागे) का उत्पादन स्थानीय बाजार के लिए छोटी इकाईयों में तथा आधुनिक उपकरणों वाली फैक्ट्रियों में किया जाता है।

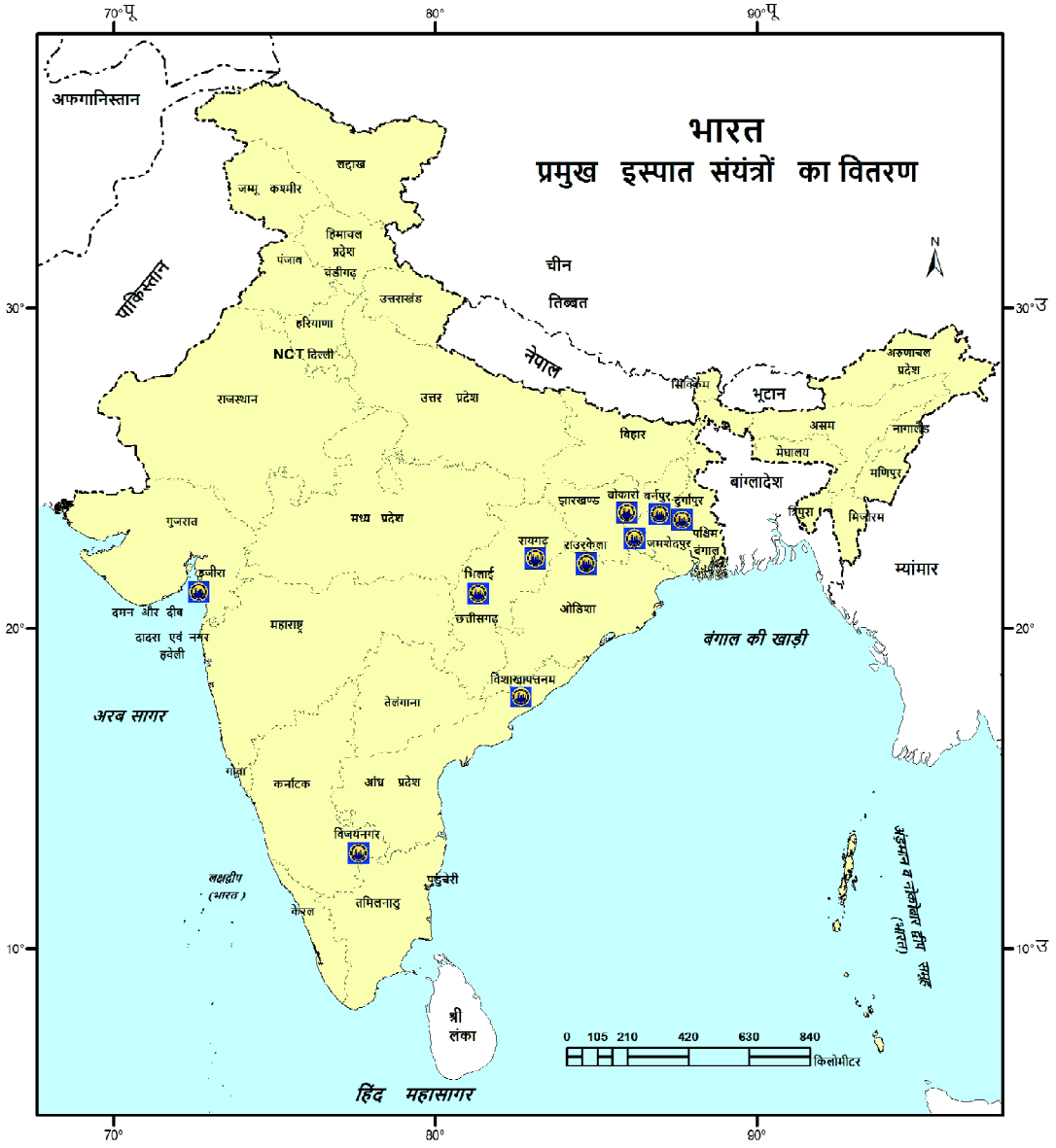

चित्र 19.4 भारत में सूती कपड़ा मिलों की अवस्थिति

टिप्पणी

वितरण के लिए उत्तरदायी घटक: देश में महाराष्ट्र सूती कपड़े का अग्रणी उत्पादक है। मुम्बई सूती कपड़ा मिलों का मुख्य केन्द्र रहा है। अभी भी आधे से अधिक सूती कपड़ा मिलें अकेले मुम्बई में अवस्थित हैं। इस कारण से इसको भारत का 'काटनपोलिस' कहा जाता है। महाराष्ट्र में शोलापुर, कोल्हापुर, नागपुर, पुणे, औरंगाबाद और जलगांव अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। क्या आप इस क्षेत्र में इतनी अधिक सूती कपड़ा मिलों की अवस्थिति का कारण सोच सकते हैं? अहमदाबाद, मुम्बई और पुणे में कपड़ा उद्योग स्थित होने के लिए निम्नलिखित घटक उत्तरदायी हैं:

1. **कच्चा माल:** इस पट्टी में बड़ी मात्रा में कपास उगाई जाती है।
2. **पूंजी:** मुम्बई, अहमदाबाद और पुणे ऐसे स्थान हैं जहां निवेश के लिए पूंजी आसानी से उपलब्ध है।
3. **यातायात के साधन:** यह क्षेत्र भारत के अन्य भागों के साथ सड़कों और रेल के माध्यम से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।
4. **बाजार तक पहुंच:** महाराष्ट्र और गुजरात में कपड़ा बेचने के बड़े बाजार हैं। यातायात के अच्छे साधन अन्य बाजारों तथा विदेशी बाजारों तक माल ढुलाई में सहायता करते हैं। आजकल सूती कपड़ा उद्योग की अवस्थिति के निर्धारण के लिए बाजार एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है।
5. **बंदरगाहों से निकटता:** मुम्बई बंदरगाह अच्छी गुणवत्ता वाली कपास तथा मशीनरी के आयात तथा तैयार माल के निर्यात की सुविधा प्रदान करता है।
6. **सस्ते मजदूर:** इस क्षेत्र में नजदीकी इलाकों से सस्ते और कुशल मजदूर मिल जाते हैं।
7. **बिजली की आपूर्ति:** यहां सस्ती और पर्याप्त बिजली उपलब्ध है।

उत्पादन: भारत कपास के कई उत्पादों का विभिन्न देशों को निर्यात करता है। उदाहरण के लिए यह जापान, युनाइटेड किंग्डम, अमेरिका, रूस, फ्रांस, पूर्वी यूरोपियन देशों, नेपाल, सिंगापुर, श्रीलंका और अफ्रीका के देशों को निर्यात करता है। यद्यपि भारत में उत्पादित धागे की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं परंतु छोटी इकाइयों को बड़ी इकाइयों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है।

भारत ने 2018-19 के दौरान 4,182 मिलियन किलोग्राम सूती धागे का उत्पादन किया था। पिछले 5 वर्षों में सूती धागे का उत्पादन किया था। पिछले 5 वर्षों में सूती धागे के उत्पादन को तालिका 19. 2 में देखा जा सकता है।

तालिका 19.3 2015-16 से लेकर 2018-19 तक सूती धागे का उत्पादन

वर्ष	**उत्पादन (मिलियन किलोग्राम में)**
2015-16	4138
2016-17	4055
2017-18	4064
2018-19	4182

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 19.4

1. सूती कपड़ा उद्योग की अवस्थिति के लिए कौन से घटक उत्तरदायी हैं?

2. चीनी मिलें अधिकांशत: आर्द्र क्षेत्रों में क्यों पाई जाती हैं?

19.5 खनिज आधारित उद्योग

कृषि आधारित उद्योगों के अतिरिक्त ऐसे उद्योग हैं जो खनिजों का प्रयोग करते हैं। उन्हें खनिज आधारित उद्योग कहा जाता है।

लोहा और इस्पात उद्योग: लोहा और इस्पात उद्योग को आधार उद्योग कहा जाता है। ऐसा इसलिए है कि अन्य सभी उद्योग इस पर निर्भर करते हैं और इसके उत्पाद उन उद्योगों का आधार बनते हैं। इस्पात का प्रयोग विभिन्न औद्योगिक वस्तुओं, उपकरणों, मशीनरी, आटोमोबाइल्स और वैज्ञानिक उपकरण बनाने में किया जाता है। लोहा और इस्पात को भारी उद्योग भी कहा जाता है क्योंकि प्रयुक्त कच्चा माल और तैयार किया माल भारी और अधिक होता है। लोहा एवं इस्पात उद्योग में लौह अयस्क, कोकिंग कोयला, चूना पत्थर और मैंगनीज का प्रयोग होता है। क्या आप इस विशेषताओं के आधार पर जान सकते हैं कि यह उद्योग कहां अवस्थित होना चाहिए।

वितरण: पहला आधुनिक स्टील प्लांट 1870 में बंगाल में कुल्टी में स्थापित किया गया था जिसमें 1874 में उत्पादन शुरू हुआ था। आज भारत में 10 मुख्य इस्पात संयंत्र हैं।

लोहा और स्टील उद्योग के तैयार माल को सक्षम यातायात के ढांचों की जरूरत होती है ताकि उसका बाजार में वितरण हो सके ताकि उपभोक्ता उनका प्रयोग कर सके।

मानचित्र को देखकर क्या आप पहचान सकते हैं कि इस्पात संयंत्र विशेष क्षेत्रों में क्यों स्थित है?

भारत में छोटानागपुर क्षेत्र में लौह और इस्पात उद्योगों की अधिकतम सघनता है। उन कारकों की एक सूची बनाइए जो इन संयंत्रों को उनके विशेष स्थानों पर स्थापित करने के लिए उपलब्ध हैं।

इस्पात उद्योग को 1991 में लाइसेंस मुक्त कर दिया गया और 1992 में इसे नियंत्रण मुक्त कर दिया गया। भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम अपने इस्पात का विपणन करते हैं।

कलिंगनगर, उड़ीसा में एक राष्ट्रीय निवेश और विनिर्माण क्षेत्र (एनआईएमजेड) विकसित किया जा रहा है, जो कि लोहा और इस्पात के मौजूदा विशाल मुख्य संयंत्रों से घिरा हुआ है। 160 वर्ग किमी में फैले इस क्षेत्र में आवासीय के साथ-साथ वाणिज्यिक और सामाजिक सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी जो इसे एक आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में सहायता करेंगी। यह संभावित निवेशकों को ऊपर से नीचे तक गुणवत्तापूर्ण सुविधाएं स्थापित करने में सहायता बनाएगी। संभावना है कि कलिंगनगर

औद्योगिक परिसर, उड़ीसा 2030 तक देश की लक्षित 300 मिलियन टन इस्पात क्षमता में 20 प्रतिशत का योगदान दे सकता है।

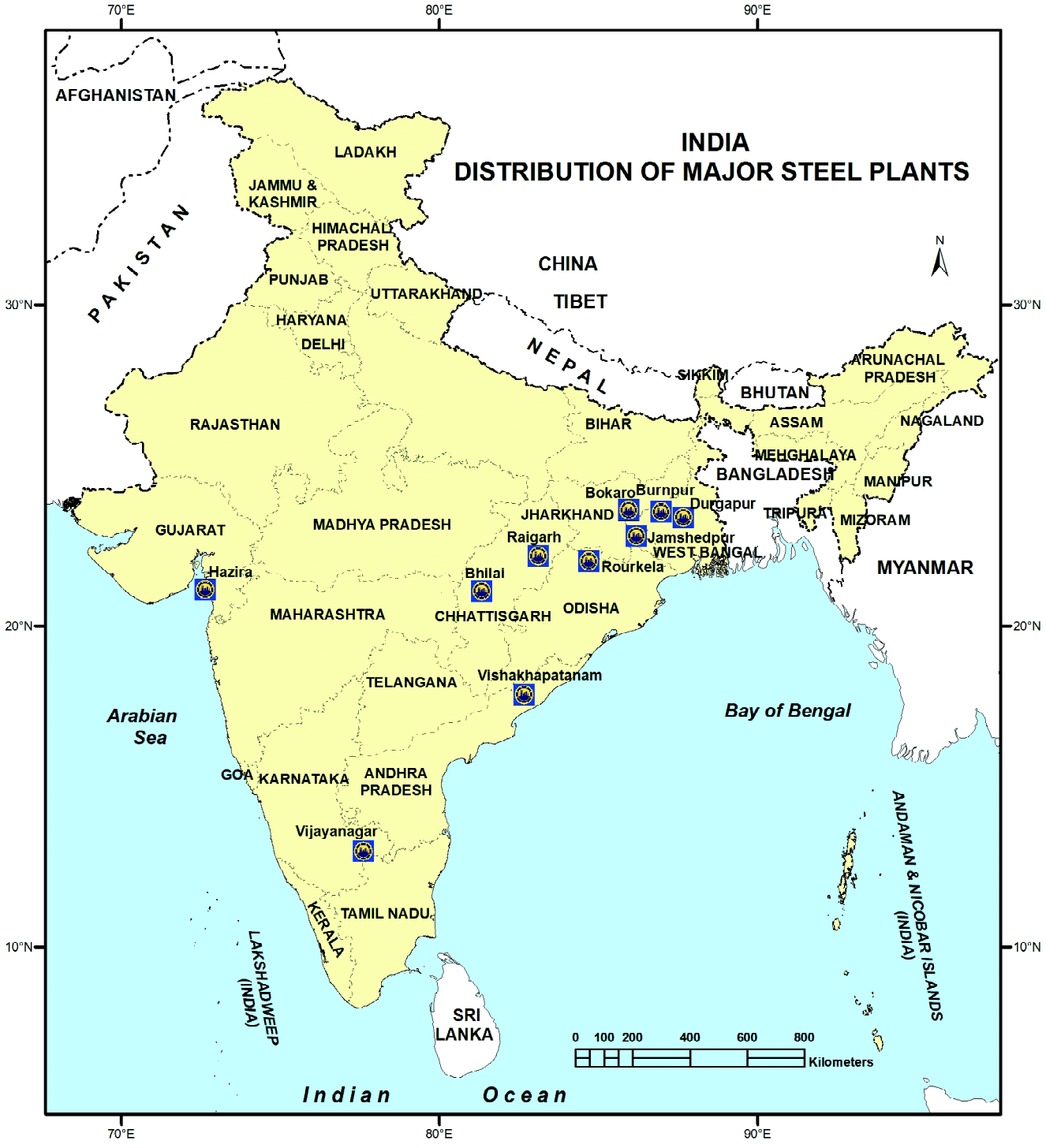

चित्र 19.5 भारत के प्रमुख लौह इस्पात संयंत्रों का वितरण

टिप्पणी

उत्पादन: भारत विश्व में इस्पात के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। तैयार इस्पात के मामले में भारत वर्ष 2018-19 में 101.28 मिलियन टन के साथ चीन के बाद विश्व में दूसरे स्थान पर है। दी गई तालिका भारत के लौह और इस्पात उद्योग में उत्पादन का एक संक्षिप्त परिचय देती है।

तालिका 19.4 वर्ष 2018-19 में भारत के लौह इस्पात संयंत्रों में विविध उत्पादों का उत्पादन

क्रम	उत्पाद	उत्पादन
1.	तैयार इस्पात (मिश्र धातु/स्टेनलेस + गैर मिश्र) धातु	101.287 मिलियन टन
2.	कच्चा लोहा	6.414 मिलियन टन
3.	स्पंज लोहा	34.71 मिलियन टन

स्रोत: https://steel.gov.in/ovcriow-steel-sector, इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार

इस तथ्य के बावजूद कि भारत लोहे और इस्पात का बहुत अधिक उत्पादन करता है, यह इसका आयात भी करता है। इसके लिए कोकिंग कोयले की अपर्याप्त आपूर्ति, श्रमिकों की कम उत्पादकता, कमजोर ढांचा और बिजली की अनियमित आपूर्ति जैसे घटक जिम्मेदार हैं। पिछले कुछ वर्षों में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश ने उद्योग को प्रोत्साहित किया है परंतु कृषि आधारित उद्योगों तथा लोहा और इस्पात उद्योग के बारे में जानने के बाद आइए इन कुछ प्रश्नों के माध्यम से अपने ज्ञान का आकलन करें।

पाठगत प्रश्न 19.5

1. लोहा और इस्पात उद्योग को आधारभूत उद्योग क्यों माना जाता है? निम्न विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

   i. यह आधारभूत वस्तुओं का प्रयोग करता है।

   ii. यह भारत में स्थापित किया गया पहला उद्योग था।

   iii. अन्य सभी उद्योग इस पर निर्भर करते हैं तथा यह उन उद्योगों को आधार प्रदान करता है।

2. भारत में लोहा और इस्पात उद्योगों का अधिकतम संकेन्द्रीकरण..... क्षेत्र में है।

3. विश्व में इस्पात उत्पादक देशों में से भारत का स्थान..... है।

टिप्पणी

19.6 औद्योगिक क्षेत्र और परिसर

अब आप उद्योगों की अवस्थिति को निर्धारित करने वाले विभिन्न घटकों तथा कुछ महत्वपूर्ण उद्योगों के बारे में जानते हैं। आइये हम भारत के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों एवं परिसरों के बारे में जानें। भारत में उद्योगों का वितरण एक समान नहीं है अपितु उनका कुछ क्षेत्रों में संकेन्द्रीकरण है जिससे परिसरों का निर्माण होता है। क्या आप सोच सकते हैं कि ऐसा क्यों होता है? जी हाँ, ऐसा उन स्थानों पर अनुकूल परिस्थितियों जैसे कच्चे बाजार, श्रम, बिजली आपूर्ति एवं अन्य ढांचागत सुविधाओं के कारण होता है। किसी औद्योगिक परिसर की पहचान के लिए कुछ विशेष संकेतक निम्नलिखित है-

1. औद्योगिक इकाइयों की संख्या
2. औद्योगिक श्रमिकों की संख्या
3. औद्योगिक उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त बिजली की मात्रा
4. सकल औद्योगिक उत्पादन
5. विनिर्माण से जोड़ा गया मूल्य

इन संकेतकों के आधार पर औद्योगिक इकाइयों के किसी संकेन्द्रीकरण को औद्योगिक परिसर कहते हैं। अथवा परिसरों के किसी क्षेत्र विशेष में संकेन्द्रीकरण को औद्योगिक क्षेत्र कहते हैं। भारत में अनेक बड़े और छोटे औद्योगिक क्षेत्र हैं जिन्हें नीचे तालिका 19.4 में दिया गया है। जैसा कि मानचित्र में देखा जा सकता है कि प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र ऐसे इलाकों में स्थित हैं जहां खनिज संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता, सस्ती श्रम आपूर्ति, बाजार एवं अन्य संरचनात्मक ढांचा उपलब्ध है।

तालिका 19.5 भारत के औद्योगिक क्षेत्रों का वर्गीकरण

औद्योगिक क्षेत्रों का वर्गीकरण	**क्षेत्र**
वृहद (8 क्षेत्र)	1. मुम्बई-पुणे क्षेत्र, 2. हुगली क्षेत्र, 3. बैंगलुरु-तमिलनाडु क्षेत्र, 4. गुजरात क्षेत्र, 5. छोटानागपुर क्षेत्र, 6. विशाखापटनम-गुंटूर क्षेत्र, 7. गुरुग्राम-दिल्ली-मेरठ क्षेत्र, 8. कोलम-थिरुवनंतपुरम क्षेत्र
लघु (13 क्षेत्र)	1. अम्बाला-अमृतसर क्षेत्र 2. सहारनपुर-मुजफ्फरनगर-बिजनौर क्षेत्र, इंदौर-देवास-उज्जैन क्षेत्र, 4. जयपुर-अजमेर क्षेत्र, 5. कोल्हापुर-दक्षिण कन्नड़ क्षेत्र, 6. उत्तरी मालाबार क्षेत्र, 7. मध्य मालाबार क्षेत्र, 8. आदिलाबाद-निजामाबाद क्षेत्र, 9. इलाहाबाद-वाराणसी-मिर्जापुर क्षेत्र, 10. भोजपुर-मुंगेर क्षेत्र, 11. दुर्ग-रायपुर क्षेत्र, 12. बिलासपुर-कोरबा क्षेत्र, 13. ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र।

टिप्पणी

मानचित्र 19.6 भारत के वृहद औद्योगिक क्षेत्र

यह जानने के लिए कि हमने कितना सीखा– आइये कुछ प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रयास करें।

पाठगत प्रश्न 19.6

1. कुछ विशेष क्षेत्रों में उद्योगों के संकेन्द्रीकरण को..... कहते हैं।

2. अनेक औद्योगिक इकाइयों एक स्थान पर क्यों अवस्थित होती हैं?

3. वर्तमान में भारत में कितने वृहद और कितने लघु औद्योगिक क्षेत्र हैं? वृहद औद्योगिक क्षेत्रों के नाम लिखिए।

टिप्पणी

4. क्या आप भारत के अति महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्रों को पहचान सकते हैं? उनके नाम लिखिए।

19.7 शासकीय पहल

अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि किसी देश की अर्थ व्यवस्था में उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए ये सरकार के लिए महत्वपूर्ण है। भारत की स्वतंत्रता से ही भारत सरकार द्वारा उद्योगों की उन्नति के लिए अनेक पहल और प्रयास किए गए हैं विशेषत: दूसरी पंचवर्षीय योजना के साथ। पिछले वर्षों में भी भारत सरकार ने देश में औद्योगिक क्षेत्र की उन्नति के लिए स्वस्थ वातावरण को प्रोत्साहित करने हेतु अनेक प्रयास किए हैं।

आइए, इनमें से कुछ प्रयासों के बारे में बात करते हैं:

- 15 जुलाई, 2015 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा कुशल भारत (स्किल इंडिया) की शुरूआत की गई ताकि वर्ष 2022 तक विभिन्न कौशलों में भारत के 40 करोड़ लोगों को प्रशिक्षित किया जा सके। इस अभियान की विभिन्न 'पहलें' निम्नलिखित हैं-
- राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन
- राष्ट्रीय कौशल विकास और उद्धमिता नीति-2015
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)
- कौशल ऋण योजना
- ग्रामीण भारत कौशल

उदाहरण के लिए यहां प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना की संक्षेप में चर्चा की गई है। यह कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय की प्रमुख योजना है, जिसको राष्ट्रीय कौशल विकास निगम द्वारा लागू किया गया। इस कौशल प्रमाणीकरण योजना का उद्देश्य भारतीय युवाओं की एक बड़ी संख्या को उद्योग संबंधित कौशलों में प्रशिक्षण लेना है जो उन्हें बेहतर आजीविका प्राप्त करने में सहायता करेगी।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 1.0 के अंतर्गत 19.85 लाख उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया गया जिनमें से 2.62 लाख (13.23 प्रतिशत) को रोजगार मिला। 2.0 (2016-2020) को अक्तूबर 2016 में प्रारंभ किया गया और जून, 2019 तक लगभग 52.12 लाख उम्मीदवार प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं और उनमें से 57 प्रतिशत को रोजगार प्राप्त हो चुका है।

टिप्पणी

क्या आप जानते हैं?

राष्ट्रीय विनिर्माण नीति 2011 में लागू की गई जिसका लक्ष्य विनिर्माण क्षेत्र में 100 मिलियन रोजगार सृजित करना तथा 2022 तक सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्रक की हिस्सेदारी बढ़ाकर 25 प्रतिशत करना है।

स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक अन्य प्रमुख पहल है जिसे 2016 में प्रारंभ किया गया। इसकी शुरूआत एक मजबूत पारिस्थितिक तंत्र निर्मित करने के लिए की गई जो स्टार्टअप व्यवसाय की उन्नति के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करे तथा दीर्घजीवी आर्थिक वृद्धि और बड़ी संख्या में रोजगार पैदा किए जा सकें। इस पहल का उद्देश्य स्टार्टअप की वृद्धि को नवाचार और डिजाइन के माध्यम से सशक्त बनाना है। इसका लक्ष्य भारत को रोजगार मागंने वाले के बजाए रोजगार देने वाले देश के रूप में बदलने के दृष्टिकोण में योगदान देना है। पिछले दिनों सरकार द्वारा नीति के स्तर पर भारत के विनिर्माण क्षेत्रक की उन्नति में सहयोग देने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं।

क्रिया कलाप: अपने राज्य के किन्हीं दो स्टार्टअप उद्योगों की पहचान कीजिए। अपने राज्य में इन स्टार्टअप के आने के पीछे के घटकों को ज्ञात करने का प्रयास करें।

पाठगत प्रश्न 19.7

1. भारत में उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार ने कदम क्यों उठाए हैं? सही उत्तर चुनिए:

   i. उद्योगों के विकास के लिए

   ii. औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने के लिए

   iii. (i) और (ii) दोनों

   iv. कृषि के विकास का मुकाबला करने के लिए

2. भारत में उद्योगों के पक्ष में पहला प्रमुख प्रयास..... के दौरान किया गया था।

3. भारत में सरकार द्वारा औद्योगिक विकास के लिए हाल ही में किए गए किन्हीं दो प्रमुख पहलों के नाम लिखिए।

4. कुशल भारत कार्यक्रम प्रारंभ करने के पीछे क्या विचार है।

आपने क्या सीखा

पाठांत प्रश्न

1. यदि कृषि और सम्बन्धित गतिविधियों को प्राथमिक क्षेत्रक के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है तो द्वितीयक क्षेत्रक के अंतर्गत किन गतिविधियों को वर्गीकृत किया जाता है?

टिप्पणी

2. भारत की अर्थव्यवस्था में उद्योग किस प्रकार योगदान देते हैं?

3. निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए–

एल्यूमिनियम	कृषि आधारित उद्योग
अमूल डेयरी उद्योग	उपभोक्ता उद्योग
चीनी उद्योग	लघु उद्योग
साबुन उद्योग	सहकारी उद्योग
पापड़ बनाने का उद्योग	खनिज आधारित भारी उद्योग

4. मोबाइल बनाने के उद्योग को किस प्रकार के उद्योग में वर्गीकृत किया जा सकता है? इस उद्योग के क्या विशेषताएं/लक्षण हैं?

5. भारत के कुछ क्षेत्रों में उद्योगों का संकेन्द्रीकरण है। इस प्रतिरूप के पीछे के कारणों की पहचान कीजिए।

6. कुछ विशिष्ट उद्योगों की अवस्थिति के लिए कुछ विशेष घटक जिम्मेदार होते हैं। ये क्या हैं? अपने उत्तर के पक्ष में उदाहरण दीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1

1. खनन और उत्खनन, विनिर्माण (पंजीकृत और अपंजीकृत), गैस, बिजली, निर्माण और जल आपूर्ति
2. 12 प्रतिशत
3. (iii)

19.2

1. उद्योगों की अवस्थिति
2. कच्चे माल के स्रोत के निकट

टिप्पणी

3. संयुक्त अर्थव्यवस्थाएं

4. लाभ को अधिकतम करना।

19.3

1. कच्चे माल का स्रोत, स्वामित्व, कार्य, उद्योग का आकार, कच्चे माल और तैयार माल का भार (वजन)

2. उपभोक्ता वस्तु उद्योग

3. सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक

19.4

1. कच्चा माल, पूंजी, यातायात के साधन, बाजार तक पहुंच, बंदरगाहों से निकटता, सस्ते मजदूर और बिजली आपूर्ति

2. क्योंकि गन्ने की उत्पादन नमी वाले क्षेत्रों में होता है।

19.5

1. (iii)

2. छोटा नागपुर क्षेत्र

3. सबसे बड़ों में से एक/दूसरा स्थान

19.6

1. औद्योगिक परिसर

2. उन्हें एक-दूसरे से लाभ मिलता है।

3. 8 बड़े और 13 छोटे

4. मुम्बई-पुणे क्षेत्र, हुगली क्षेत्र, बैंगलुरु-तमिलनाडु क्षेत्र, गुजरात क्षेत्र, छोटानागपुर क्षेत्र, विशाखापट्नम-गुंटूर क्षेत्र, गुरुग्राम-दिल्ली-मेरठ क्षेत्र, कोल्लम-थिरुवनंतपुरम क्षेत्र (इनमें से कोई)

टिप्पणी

19.7

1. (iii)
2. द्वितीय पंच वर्षीय योजना
3. कौशल भारत अभियान, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, स्टार्टअप इंडिया (कोई दो)
4. 2022 तक भारत में 40 करोड़ लोगों को विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षित करना।